वन्दना गुप्ता

ये तेरा घर वो मेरा घर

ई-मेल-drvg1964@gmail.com

मम्मी की अलमारी से एलबम निकालते हुए एक डायरी नीचे गिर पड़ी। एलबम में हमारे बचपन की यादों के चित्र थे और डायरी में मम्मी ने भावनाओं के शब्दचित्र उकेरे थे। जो पन्ना खुला, उस पर अपना नाम देख उत्सुकतावश पढ़ने लगी...

20 अप्रैल

लॉकडाउन से परेशानी है किन्तु कुछ सुकून भी... आखिर इतने लंबे समय के बाद पूरा परिवार एक साथ एक छत के नीचे ज़िन्दगी का जश्न मना रहा है। कोरोना संक्रमितों के बढ़ते आँकड़े और मृत्युदर खौफ पैदा करते हैं, किन्तु अपनों का साथ होना और सलामत रहना राहत की बात है।

2 मई

एक ही शहर में शादी होने से बेटियों को मायके का सुख नहीं मिलता। हमारे घर में आज भी बेटी का कमरा खाली है, किन्तु वह कभी रात में रुकी ही नहीं। स्वप्निल कहता भी है कि दीदी के कमरे में अपना सामान शिफ्ट कर लूँ, किन्तु मैंने मना कर दिया। वह भी तो हॉस्टल में रहता है। घर पर तो सेमेस्टर ब्रेक में ही आ पाता है। अब इस समय बेटी और दामाद ने आग्रह स्वीकार कर ही लिया। उनके बेटे नील की तोतली बोली से घर चहकने लगा है।

10 मई

स्वरा बहुत बदल गई है। हर बात में मुझे टोकती है और मेरे हर काम में मीन-मेख निकालती है। कहती है कि "हमारे घर तो ऐसा होता है, आप भी ऐसा करो.." मुझे खुशी है कि उसने ससुराल को अपना घर बना लिया, किन्तु यह घर भी तो उसी का है। क्या वह भूल गई कि उसकी मम्मा सुपर वुमन है? क्या चार साल पच्चीस साल पर भारी पड़ गए?

20 मई

आज दोपहर में स्वरा का मोबाइल बजा। अमेज़न से नील के लिए सामान मँगवाया था। डिलीवरी बॉय को वह एड्रेस समझा रही थी... "नहीं! वहाँ नहीं, अभी मैं अपने घर पर हूँ, वही पुराने एड्रेस पर डिलीवरी दे दो।" मुझे खुशी हुई कि वह इस घर को अभी भी अपना समझती है।

पढ़कर आँखों के साथ मन भी भीग गया। एक पन्ने में सिमटे एक महीने ने मुझे पूरी ज़िन्दगी में अपने घर की पीढ़ी दर पीढ़ी बदलती परिभाषा समझा दी।

वन्दना गुप्ता

हवा का रुख़

बेटी की शादी की खरीदारी करते हुए अनन्त गुस्साया, "देखो फालतू खर्च करने की जरूरत नहीं है, बेटी की जिद के आगे उसकी खुशी के लिए झुके हैं, हम समझौता कर रहे हैं तो उसे भी समझना होगा।"

अलका को तीस वर्ष पूर्व की बात याद आई जब उसकी जिद के कारण माता-पिता ने अनंत से विवाह की स्वीकृति दी थी। सादे समारोह में विवाह के बाद वह ससुराल आ गयी। ससुराल में स्वागत के साथ ताने भी थे, शादी की व्यवस्था और उपहारों को लेकर कि तुम्हारे पिताजी ने ये नहीं किया और वो नहीं दिया इत्यादि।

आज बेटी की लव कम अरेंज मैरिज के लिए अनंत को मनाने में वक़्त लगा। इतिहास को दोहराते देख अलका सोच में थी। फिर बोली, "सुनो जी! बेटी की ससुराल में इज्जत हो उतना तो हमें करना ही चाहिए। लोग अच्छे हैं, कोई डिमाँड भी नहीं है, बेटी खुश रहेगी और फिर यहाँ सभी तो मुझे कहते रहते हैं कि मेरे पिताजी ने कुछ नहीं..."

"हाँ तो क्या गलत किया तुम्हारे पिताजी ने? बच्चे अपनी मर्जी की करें तो ऐसा ही करना चाहिए.." अनंत उसकी बात बीच में काट कर बोला।

वह अवाक् हो अपने पति को बेटी का पिता बनते देखती रह गयी।

उत्तराधिकारी

स्टेशन मास्टर के सामने मज़मा लगा है। रामदीन कुली की पत्नी बेटी को बाप का उत्तराधिकारी घोषित कर उनका बैज और नम्बर दिलवाने की जिद पकड़े है, वहीं बेटे की दलील है कि बड़ी बहन तो शादी कर चली जाएगी, मुझे ही माँ का ख्याल रखना होगा।

मेहनती, दयालु और शांत प्रवृत्ति का कुली रामदीन दो महीने पहले ही चलती गाड़ी में यात्री का सामान चढ़ाते हुए पैर फिसलने से पटरियों पर गिर गया था। दुर्घटना में तो पैर ही कटे थे, लेकिन बीवी, बेटी और शराबी निकम्मे बेटे की चिंता ने तन के साथ मन को भी तोड़ दिया। हिम्मत टूटी और ज़िंदगी रूठी।

यूनियन लीडर बोले—"बाप के बिल्ले पर बेटे का ही अधिकार है। कुलीगिरी महिलाओं का काम नहीं है और वैसे भी, बेटी कौन सी उनकी अपनी है?"

बेटे ने आग में घी डाला—"स्टेशन पर किसी के छोड़े हुए पाप के लिए आप अपने सगे बेटे का हक मत मारो।"

भड़क उठी वह—"खबरदार जो मेरी बेटी को पाप कहा। मुझ पर लगा बाँझ का कलंक मिटाया है इसने। मेरी ममता फूटने से ही शायद तू मेरी गोदी में आया। तू तो निकम्मा होकर बाप की कमाई भी शराब में उड़ाता रहा, तो हमें क्या कमाकर देगा? रही बात इसके ससुराल जाने की तो सुन, इससे कोई शादी नहीं करेगा, आज बता रही हूँ यह किसी का पाप नहीं मजबूरी थी शायद... हम सबकी किस्मत अच्छी थी, वरना यह आज कहीं ताली बजाकर अपना पेट पाल रही होती।"